कथा सरिता

मटके में पाप

एक बार घूमते-घूमते कालिदास बाज़ार गये। वहां एक महिला बैठी मिली। उसके पास एक मटका था और कुछ प्यालियां पड़ी थीं। कालिदास ने उस महिला से पूछा, क्या बेच रही हो ? महिला ने जवाब दिया, महाराज! मैं पाप बेचती हूँ।

कालिदास ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, पाप और मटके में! महिला बोली हाँ महाराज! मटके में पाप है। कालिदास `कौन-सा पाप है ?' महिला, `आठ पाप इस मटके में है, मैं चिल्लाकर कहती हूँ कि मैं पाप बेचती हूँ पाप, और लोग पैसे देकर पाप ले जाते हैं।

अब महाकवि कालिदास को और आश्चर्य हुआ, `पैसे देकर लोग पाप ले जाते हैं! महिला, `हाँ महाराज! पैसे से खरीदकर लोग पाप ले जाते हैं।'

कालिदास, `इस मटके में आठ पाप कौन-कौन से हैं ?' महिला, `क्रोध, बुद्धिनाश, यश का नाश, स्त्री एवं बच्चों के साथ अत्याचार और अन्याय, चोरी, असत्य आदि दुराचार, पुण्य का नाश और स्वास्थ्य का नाश। ऐसे आठ प्रकार के पाप इस घड़े में हैं।

कालिदास को कौतुहल हुआ कि यह तो बड़ी विचित्र बात है। किसी भी शास्त्र में नहीं आया है कि मटके में आठ प्रकार के पाप होते हैं। वे बोले `आखिर इसमें क्या है ?' महिला, `महाराज! इसमें शराब है शराब!'

कालिदास महिला की कुशलता पर प्रसन्न होकर बोले `तुझे धन्यवाद है! शराब में आठ प्रकार के पाप हैं यह तू जानती है और `मैं पाप बेचती हूँ' ऐसा कहकर बेचती है, फिर भी लोग ले जाते हैं।

प्रभु स्मरण कष्ट निवारक

एक बार गुरुनानक देव जी जगत का उद्धार करते हुए एक गाँव के बाहर पहुँचे; देखा वहां एक झोपड़ी बनी हुई थी। उस झोपड़ी में एक आदमी रहता था जिसे कुष्ठ रोग था। गाँव के सारे लोग उससे नफरत करते, कोई उसके पास नहीं जाता था। कभी किसी को दया आ जाती तो उसे खाने के लिए कुछ देते अन्यथा भूखा ही पड़ा रहता।

नानक देव जी उस कोढ़ी के पास गये और कहा, भाई! हम आज रात तुम्हारी झोपड़ी में रहना चाहते हैं अगर तुम्हें कोई परेशानी ना हो तो! कोढ़ी अपने रोग से इतना दुःखी था कि चाह कर भी कुछ ना बोल सका; सिर्फ नानकदेव जी को देखता ही रहा। लगातार देखते-देखते ही उसके शरीर में कुछ बदलाव आने लगे पर कुछ कह नहीं पा रहा था।

नानकदेव जी ने उस व्यक्ति से कहा, `रबाब बजाओ'। नानकदेव जी ने उस झोपड़ी में बैठकर कीर्तन करना आरंभ कर दिया। कोढ़ी ध्यान से कीर्तन सुनता रहा। कीर्तन समाप्त होने पर कोढ़ी के हाथ जुड़ गये जो ठीक से हिलते भी नहीं थे। उसने नानकदेव के चरणों में अपना माथा टेका। नानकदेव जी ने कहा, `और भाई ठीक हो; यहां गांव के बाहर झोपड़ी क्यों बनाई है ?' कोढ़ी ने कहा, `मैं बहुत बदकिस्मत हूँ, मुझे कुष्ठ रोग हो गया है। मुझसे कोई बात तक नहीं करता, यहां तक कि मेरे घरवालों ने भी मुझे घर से निकाल दिया है। मैं नीच हूँ इसलिए कोई मेरे पास नहीं आता।'

उसकी बात सुनकर नानकदेव जी ने कहा, `नीच तो वो लोग हैं जिन्होंने तुम जैसे रोगी पर दया नहीं की और अकेला छोड़ दिया। आ मेरे पास, मैं भी तो देखूँ कहां है कोढ़!' जैसे ही कोढ़ी नानकदेव जी के नज़दीक आया तो प्रभु की ऐसी कृपा हुई कि कोढ़ी बिल्कुल ठीक हो गया। यह देख वह नानकदेव के चरणों में गिर गया। गुरुनानकदेव जी ने उसे उठाया और गले से लगाकर कहा, `प्रभु स्मरण करो और लोगों की सेवा करो; यही मनुष्य के जीवन का मुख्य कार्य है।

जैसी शिक्षा वैसा चरित्र

अध्ययन की अपनी उपयोगिता है, पर व्यावहारिक रूप में जो शिक्षाएं मानव जीवन को गढ़ती हैं, उनका महत्व बहुत अधिक है। स्वामी विवेकानंद (नरेन्द्र) के बचपन की घटना है। वे तब लगभग छह वर्ष के थे, तब अपने मित्र के साथ चैत्र संक्रांति पर होने वाले शिव पूजन का उत्सव देखने गए थे। वापस आते समय दोनों मित्र घर पर पूजा के लिए मिट्टी के महादेव की प्रतिमा भी लेकर आ रहे थे। शाम होने को थी और अंधेरा बढ़ रहा था। नरेन्द्र आगे थे और मित्र पीछे। तभी पीछे से तेज़ गति से घोड़ागाड़ी आई। मित्र का ध्यान नहीं था, जब नरेन्द्र ने देखा तो घोड़े का पैर मित्र पर पड़ने ही वाला था। रास्ते से गुज़र रहे राहगीर ज़ोर से चीख पड़ें किंतु किसी को यह समझ नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए।

नरेन्द्र ने तत्काल बगल में रखी शिव प्रतिमा को नीचे रखा और तेज़ी से दौड़कर मित्र को पकड़ा और उसे बाहर की ओर खींचा। अगले ही क्षण वहां से घोड़ागाड़ी गुज़र गई। सड़क पर खड़े सारे लोग इकट्ठा हो गए और नरेन्द्र को धन्यवाद देते हुए उसकी तारीफ करने लगे। नरेन्द्र अपने कार्य के महत्व से अनजान घर गए और रोज़ जिस तरह माँ को सारी घटनाएं सुनाते, यह घटना भी सुना दी। माँ ने सारी बात ध्यान से सुनी और अंत में कहा - बेटा, तुमने जो किया, वही तो मनुष्य का कार्य है। आगे जीवन में भी इसी तरह मनुष्य होने की चेष्टा करते रहना। इस प्रकार की शिक्षा का नरेन्द्र के जीवन पर ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा और आगे चलकर वे स्वामी विवेकानंद के रूप में सारे विश्व में प्रसिद्ध हुए। स्वामीजी ने परवर्तीकाल में उपलब्धियों को अपनी माँ की शिक्षाओं का प्रतिफल बताया है।

वर्तमान में सफलता अर्जित करने के लिए पुस्तकीय ज्ञान का महत्व अधिक महसूस किया जा रहा है लेकिन यह बात ध्यान में रखने की है कि अध्ययन की अपनी उपयोगिता है, पर व्यावहारिक रूप में जो शिक्षाएं मानव जीवन को गढ़ती हैं, उनका महत्व बहुत अधिक है। ऐसी शिक्षा में व्यक्ति अपने जीवन की सार्थकता पाता है और समाज एक नई दिशा।

ज्ञान दान ही सर्वश्रेष्ठ दान

तीन भाइयों में इस बात को लेकर बहस छिड़ गई कि सर्वश्रेष्ठ दान कौन सा है। पहले ने कहा कि धन का दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है, दूसरे ने कहा कि गौ-दान सर्वश्रेष्ठ दान है। तीसरे ने कहा कि भूमि दान ही सर्वश्रेष्ठ दान है। निर्णय न हो पाने के कारण वे तीनों अपने पिता के पास पहुंचे।

पिता ने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने सबसे बड़े पुत्र को धन देकर रवाना कर दिया। वह पुत्र गली में पहुंचा और एक भिखारी को वह धन दान में दे दिया। इसी तरह उन्होंने दूसरे पुत्र को गाय दी। दूसरे पुत्र ने भी उसी भिखारी को गाय दान में दे दी। फिर तीसरा पुत्र भी उसी भिखारी को भूमि दान देकर लौट आया।

कुछ दिनों बाद पिता अपने तीनों पुत्रों के साथ उस गली में टहल रहे थे जहां वह भिखारी प्रायः मिलता था। उन लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वह अब भी भीख मांग रहा था। उस भिखारी ने गाय और भूमि बेचने के पश्चात् प्राप्त हुआ पूरा पैसा मौज मस्ती में उड़ा दिया था। पिता ने समझाया `वही दान सर्वश्रेष्ठ दान है जिसका सदुपयोग किया जा सके। ज्ञानदान ही सर्वश्रेष्ठ दान है।'

कोलकाता-प.बंगाल। महाबोधि सोसायटी द्वारा बुद्ध जयंती के अवसर पर आयोजित 'रेस्पॉन्सिब्लिटीज़ ऑफ रिलीजन इन सॉलविंग टुडेज़ ग्लोबल क्राइसेज़' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. कानन। साथ हैं राज्यपाल महामहिम केशरी नाथ त्रिपाठी, स्वामी परमात्मनंद महाराज व अन्य।

दिल्ली-मजलिस पार्क। जल एवं स्वच्छता मंत्री रामकृपाल यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. राजकुमारी व अजीत भाई। साथ हैं ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. ज्योति व अन्य।

जगन्नाथ पुरी। मीडिया से सम्बन्धित लोगों के लिए आयोजित सेमिनार में दीप प्रज्वलित करते हुए लालातेन्दु महापात्र,डिप्रो, डॉ. यू.सी. चिनारा,रिटायर्ड प्रो.,एस.सी.एस. ऑटो कॉलेज, ब्र.कु. शान्तनु,मुख्यालय संयोजक,मीडिया प्रभाग, ब्र.कु. सुशांत, राष्ट्रीय संयोजक,मीडिया प्रभाग, ब्र.कु. प्रतिमा व अन्य।

ऋषिकेश। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान अपने विचार प्रकट करते हुए स्वामी ओमकारानंद जी। साथ हैं ब्र.कु. आरती।

डिबरुगढ़-असम। 'सुपर मेमोरी, माइन्ड पॉवर एंड मेडिटेशन मैनेजमेंट' कार्यक्रम में इस विषय से सम्बन्धित जानकारियां देते हुए ब्र.कु. शक्तिराज। साथ हैं ब्र.कु. बिनीता व ब्र.कु. बिधान।

हजारीबाग-झारखण्ड। होली क्रॉस संस्थान में पूरे भारतवर्ष से आईं नन्स को राजयोग प्रशिक्षण देते हुए ब्र.कु. हर्षा।